International Journal of Applied Research 2023; 9(6): 406-412

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(6): 406-412
www.allresearchjournal.com
Received: 20-03-2023
Accepted: 25-04-2023

अरुण कुमार
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अरुण कुमार
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

अरुण कुमार

सारांश
अध्ययन का शीर्षक ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन हैं | उद्देश्य के रूप में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया हैं | शोध समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्ता ने वर्णात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया हैं | जनसँख्या के रूप में जालौन जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा -10 में पढ़ने वाले छात्र- छात्राओं को जनसँख्या माना गया हैं | प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में जालौन जनपद के 4 माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरित याद्रच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन कर उसमे अध्ययनरत 150 विद्यार्थियों का चयन साधारण याद्रच्छिक विधि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से किया गया हैं | डा0 टी0आर0 शर्मा द्वारा निर्मित एकेडमिक अचीवमेंट मोटिवेशन टेस्ट का प्रयोग किया गया हैं जिसमे कुल 38 प्रश्न हैं | निश्कर्षत: ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलव्धि अभिप्रेणा में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया |

कूटशब्द: शिक्षा, सांस्कृतिक जीवन, सामाजिक अनुवांशिकता

प्रस्तावना
मानवीय जीवन ईश्वर की सर्वश्रेष्ट कृति हैं | जिसके दो पहलू हैं जैविक तथा सामाजिक या सांस्कृतिक जहाँ भोजन तथा प्रजनन जैविक जीवन को बनाये रखने तथा बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं वहीँ शिक्षा सांस्कृतिक जीवन के लिए जीव विज्ञान की द्रष्टि से वनस्पति तथा जीव दोनों के सामने कहे जा सकते हैं

परन्तु सामाजिक या सांस्कृतिक जीवन के मनुष्यों में ही पाया जा सकता हैं क्योंकि सिर्फ मनुष्य में ही शिक्षित होने की क्षमता हैं | जॉन डीवी ने कहा कि जिस तरह भोजन प्रजनन जैविक जीवन की आवश्यकता हैं उसी तरह शिक्षा सामाजिक जीवन की शिक्षा के माध्यम से मनुष्य नये विचार तथा जीवन शैलियों को अपनाने की कोशिश करता हैं शिक्षा से ही वह अपनी बौद्धिक क्षमता तथा ज्ञान को बढ़ाकर प्रकृति को अपनी इच्छा के अनुरूप नियंत्रित करने का प्रयास करता हैं तथा इस ज्ञान को आने वाली पीढ़ियों को देता हैं | मनुष्य का जीवन सिर्फ जैविक ही नहीं वरन सामाजिक क्रियाओं से नियंत्रित होता हैं | जहाँ जैविक क्रियाये अनुवांशिकता से निर्देशित होती है वही शिक्षा सामाजिक अनुवांशिकता कही जा सकती हैं | सिर्फ जीव अनुवांशिकता की द्रष्टि से मनुष्य तथा पशुओं में कोई फर्क नहीं रह जायेगा अतएव हम कह सकते हैं कि सकते हैं कि यह एक सामाजिक अनुवांशिकता हैं जो उसे श्रष्टि को नियंत्रित करने की क्षमता देती हैं | इस तरह शिक्षा एक महत्पूर्ण जैविक क्रिया कही जा सकती हैं |

जॉन लॉक के अनुसार, जिस तरह कृषि पौधों को उसी तरह शिक्षा मनुष्य को विकसित करती हैं |

विना किसी प्रेरणा से प्रेरित हुआ व्यक्ति किसी कार्य को नहीं कर सकता हैं | अभिप्रेरणा ध्यानाकर्षण एवं प्रलोभन की कला हैं, जिसके परिणामस्वरुप व्यक्ति के अन्दर किसी कार्य को करने की इच्क्षा एवं जिज्ञासा उत्पन्न होती हैं अर्थात मानव व्यव्हार कुछ प्रेरको द्वारा ही नियमित, प्रदर्शित एवं रूपांतरित होता हैं | अभिप्रेरणा अधिगम की आवश्यक अंग हैं इसके द्वारा किसी क्रिया को सीखने के लिए बालक में उत्साह उत्पन्न किया जा सकता हैं | अभिप्रेरणा आंतरिक उत्तेजना एवं बाहा उत्तेजना दोनों हो सकती हैं | अभिप्रेरणा के सम्बन्ध में ड्रेवर ने लिखा हैं –" अभिप्रेरणा एक भावात्मक क्रियात्मक कारक हैं जो चेतना अथवा अवचेतना ढंग से निर्धारित परिणाम अथवा लक्ष्य की ओर व्यक्ति के व्यव्हार की दिशा को निर्धारित करने के लिए क्रियाशील होती हैं |

अभिप्रेरणा व्यक्ति के अन्दर होने वाला शक्ति परिवर्तन हैं जो भावात्मक जाग्रति तथा पूर्वानुमान उद्देश्य द्वारा वर्णित होता हैं | इस सन्दर्भ में डी0एस0 यादव ने अभिप्रेरणा को मात्र आंतरिक उत्तेजना मानते हैं | डी0ए0 यादव के अनुसार, मनोवैज्ञानिक अर्थ में अभिप्रेरणा से अभिप्राय केवल आंतरिक उत्तेजनाओ से होता हैं | जिन पर हमारा व्यवहार आधारित होता हैं | मनोवैज्ञानिक अर्थ में बाहा उत्तेजनाओं को कोई महत्व नहीं दिया जाता हैं |

मनुष्य में अभिप्रेरक तत्वों भूख, प्यास, कम, नीद, विश्राम आदि जन्मजात अभिप्रेरक पाए जाते हैं | इनके आभाव में मानव जीव की कल्पना नहीं की जा सकती हैं | मनुष्य अपने बौद्धिक क्षमता के सहारे कुछ अभिप्रेरक तत्व जैसे अभिरुचि, आनन्द, जीवन लक्ष्य आदि व्यक्तिगत तो सामुदायिक, स्वाग्रह, युद्ध, प्रेम आदि सामाजिक अभिप्रेरक तत्वों की खोज किया हैं | माध्यमिक स्तर तक के विद्यार्थियों में अर्जित अभिप्रेरक तत्वों का विकास आवश्यक होता हैं | ऐसे अभिप्रेरक तत्वों से संवेगात्मक बुद्धि सही दिशा प्राप्त करती हैं |

मनुष्यों में अभिप्रेरक तत्वों भूख, प्यास, काम, नींद, विश्राम आदि जन्मजात अभिप्रेरक पाए जाते हैं | इनके आभाव में मानव जीव की कल्पना नहीं की जा सकती हैं | मनुष्य अपने बौद्धिक क्षमता के सहारे कुछ अभिप्रेरक तत्वों जैसें अभिरुचि, आनन्द, जीवन लक्ष्य आदि व्यक्तिगत तो सामुदायिक, स्वाग्रह, युद्ध, प्रेम आदि सामाजिक अभिप्रेरक तत्वों की खोज किया हैं | माध्यमिक स्तर तक के विद्यार्थियों में अर्जित अभिप्रेरक तत्वों

का विकास आवश्यक होता हैं | ऐसे अभिप्रेरक तत्वों से संवेगात्मक बुद्धि सही दिशा प्राप्त कराती हैं |

व्यक्ति प्रतिदिन अपने जीवन में अपने घर में, परिवार में, समाज में तथा आसपास के लोगो में उपलब्धियों को पाते हुए देखता हैं और उनके सुखी एवं समृद्धि से परिपूर्ण वातावरण से कुछ न कुछ सीख लेता हैं और यह सीख उसको अपने खुद की उपलब्द्धि के लिए उसे प्रेरित करती हैं | जिसे हम अभिप्रेरणा कहते हैं | बालक पढाई के दौरान जब अपने आसपास के लोगो को पढाई में सफल होते हुए देखता हैं तो वह स्वयं को उसके समान बनाने की कोशिश करता हैं और इसके लिए वह विभिन्न प्रकार के गतिविधियों व प्रयासों को करता रहता हैं | व्यक्ति यह सब शिक्षा से सम्बंधित गतिविधियों को शैक्षिक अभिप्रेरणा के द्वारा ही कर पाता हैं | जिसे हम शैक्षिक अभिप्रेरणा कहते हैं | यह अभिप्रेरणा उसके मस्तिष्क में इतना बल प्रदान करती हैं कि वह अपने शैक्षणिक कार्यों को और अधिक परिश्रम लगन व तन्मयता के साथ करने की शक्ति प्राप्त कर लेता हैं |

बालकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा में सबसे अधिक प्रभाव पारिवारिक वातावरण एवं माता-पिता के साथ – साथ उनके सामाजिक- आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पढ़ता हैं | जैसा कि कहा गया हैं कि परिवार बच्चों का प्रथम पाठशाला होता हैं एवं माँ उनकी प्रथम शिक्षिका होती हैं | अतः परिवार एवं माँ का शैक्षिक अभिप्रेरणा पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार प्रभाव डालता हैं |पूर्व अध्ययन में मौला, जे.एम.(2010) ने अध्ययन में इंगित किया कि विद्यार्थियों के गृह वातावरण के छः विमा पिता के व्यवसाय, माता के व्यवसाय, पिता के शैक्षिक योग्यता, माता के शैक्षिक योग्यता, पारिवारिक आकार एवं माता द्वारा घर में शिक्षा के लिए छूट का शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक एवं धनात्मक सहसंबंध पाया गया | चौहान एवं खान (2010) ने अध्ययन पाया कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक समर्थन की विमा गृह वर्क एवं शैक्षिक क्रियाकलाप का सार्थक प्रभाव पड़ता हैं |

विद्यालयी वातावरण के साथ-साथ उनके शिक्षकों का पड़ता हैं | अलथाफ लिंडे एण्ड मासन(2007) ने अध्ययन में पाया कि जिन कक्षाओं का वातावरण अच्छा एवं अध्यापकों का छात्रों के प्रति द्रष्टिकोण अच्छा था उस कक्षा के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा अन्य कक्षाओं के छात्रों की अपेक्षा अधिक थी | उठवाल राहुल (2017) ने निष्कर्ष रूप में इंगित किया कि शिक्षक की भूमिका सर्वप्रथम एक मनोवैज्ञानिक के रूप में हैं | शिक्षक के लिए यह आवश्यक हैं कि वह कक्षा में उपस्थिति विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, प्रेरणाओं एवं मनोवृत्तियों की जानकारी रखें | शिक्षक विद्यार्थियों को समझने में जिस सीमा तक सफल होते हैं उसी समय तक उनका अध्य्यापन प्रभावी होता हैं तथा विद्यार्थी उनकी शिक्षा से लाभान्वित हो पाते हैं | अतः एक सफल शिक्षक ऐसे विद्यार्थी की सहायता करता हैं और उसकी समायोजन समस्या के समाधान का प्रयास करता हैं |

अतः वर्तमान परिद्रश्य में शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, व्यक्तित्व, संवेगात्मक, सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण प्रभाव डालता हैं | अतः अध्ययनकर्ता द्वारा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों पर यह अध्ययन किया गया हैं |

समस्या कथन

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन |

अध्ययन का उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना |
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना |
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना |

परिकल्पनाएं

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया हैं

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं |
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं |
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं |

शोध विधि

शोध समस्या की प्रक्रति को ध्यान में रखते हुए अध्ययनकर्ता ने वर्णात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया हैं |

जनसंख्या

जनसंख्या के रूप में जालौन जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा -10 में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को जनसंख्या माना गया हैं |

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में जालौन जनपद के 4 माध्यमिक विद्यालय का चयन स्तरित याद्रच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चयन कर उसमें अध्ययनरत 150 विद्यार्थियों का चयन साधारण याद्रच्छिक विधि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से किया गया हैं |

उपकरण

डा0 टी0आर0 शर्मा द्वारा निर्मित " एकेडमिक अचीवमेंट मोटीवेशन टेस्ट " का प्रयोग किया गया हैं जिसमे कुल 38 प्रश्न हैं |

प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीक

प्रद्त्तों के संकलन द्वारा परिगणन के पश्चात् निर्मित की गई शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए टी-अनुपात तकनीक का उपयोग किया गया हैं |

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना |

सारणी 1: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, तथा टी-अनुपात

क्रमांक	क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण	69	24.22	4.82	1.35	0.05
2.	शहरी	81	25.22	4.18		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट हैं कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमानों के अन्तर का टी-अनुपात का मान 1.35 हैं जो कि सार्थक स्तर पर 0.05 तथा मुक्तांश 148 के सारणी मान 1.98 से कम हैं अर्थात मध्यमानों में असार्थक अन्तर हैं | अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती हैं अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं|

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना |

सारणी 2: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, तथा टी-अनुपात

क्रमांक	क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण	41	23.49	4.59	3.16	0.05
2.	शहरी	35	26.77	4.43		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट हैं कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमानों के अन्तर का टी-अनुपात का मान 3.16 हैं जो कि सार्थक स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 74 के सारणी मान 2.00 से अधिक हैं अर्थात मध्यमानों में सार्थक अन्तर हैं अतः शून्य परिकल्पना निरस्त होती हैं अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर हैं अर्थात शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अपेक्षा उच्च हैं |

3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना |

सारणी 3: माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन, तथा टी-अनुपात

क्रमांक	क्षेत्र	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान	सार्थकता स्तर
1.	ग्रामीण	28	25.29	5.04	1.15	0.05
2.	शहरी	46	24.04	3.60		

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट हैं कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमानों के अन्तर का टी-अनुपात का मान 1.15 हैं जो कि सार्थक स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 72 के सारणी मान 2.00 से कम हैं अर्थात मध्यमानों में असार्थक अन्तर हैं अत: शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती हैं अर्थात माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं |

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं –

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं |
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर हैं अर्थात शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अपेक्षा उच्च हैं |
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं |

निष्कर्षत:

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि अभ्प्रेरना में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया समान शोध काला, पी. चन्द्रा एवं शिरलिन, पि.(2017) ने अध्ययन में इंगित किया कि लिंग कॉलेज के क्षेत्र, विद्यार्थियों के निवास स्थान एवं कॉलेज के प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों के उपलब्धि अभ्प्रेरना एवं सामाजिक – आर्थिक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं | जबकि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर हैं समान शोध अध्ययन सिंह एवं बघेल (2017) ने अपने अध्ययन में इंगित किया कि ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में शैक्षिक उओलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं |

सन्दर्भ

1. साराह ई0 अलताफ, क्रिस्टेन जे0 लिंडे जॉन मासन, (2017) हाईस्कूल स्टूडेंट एकेडमिक एचीवमेंट स्टूडेंट मोटीवेशन, क्लासरूम कम्न्युकेशन,जरटेशन थीसिस ऑनलाइन समर्थन |
2. उठवाल राहुल (2017) एक शिक्षक की प्रेरणा उत्प्रेरक के रूप में चुनौतियाँ एवं समाधान, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ़ हिन्दी रिसर्च वाल्यूम-3 इश्शू-5 प्र0 06-08 |
3. काला, पी. चन्द्रा एवं शिरलिन, पी. (2017). ए स्टडी ऑन एचीवमेंट मोटिवेशन एण्ड

सोशियो-इकोनोमिक स्टेटस ऑफ़ कॉलेज स्टूडेंट्स इन तिरूनेवल्ली डिस्ट्रिक, इन्टरनेशनल जनरल ऑफ़ रिसर्च ग्रंथालय, वाल्यूम-5, इश्शु -3, प्र0 57-64

4. चोहान एवं खान (2010) इम्पैक्ट ऑफ़ पैरेंटल सपोर्ट ऑन द एकेडमिक परफार्मेन्स एण्ड सेल्फ-कांसेप्ट ऑफ़ द स्टूडेंट, जनरल ऑफ़ रिसर्च एण्ड रिफलेशन इन एजुकेशन, वाल्यूम-, नं01, पृ014-26
5. मौला, जे. एम. (2010), ए स्टडी ऑफ़ द रिलेशनशिप बिटविन एकेडमिक एचीवमेंट मोटीवेशन एण्ड होम इन्वायरमेंट एमंग स्टैण्डर्ड एट पीपुल्स, एजुकेशन रिसर्च एण्ड रिव्युम वाल्यूम-5(5), पृ0213-217.